

डॉ. रॉबर्ट यारब्रो, द जोहानिन एपिस्टल्स, सत्र 1 - जॉन के पत्रों के लेखक, तिथि और सेटिंग

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो और जोहानिन एपिस्टल्स, बैलेंसिंग लाइफ इन क्राइस्ट, सत्र 1, लेखक, तिथि और जॉन के पत्रों की सेटिंग पर उनकी शिक्षा है।

नमस्ते, हम अभी जोहानिन एपिस्टल्स पर एक अध्ययन शुरू कर रहे हैं, और अगर संयोग से आप 1 जॉन की पुस्तक की व्याख्या की तलाश कर रहे हैं, तो आपको इस श्रृंखला में व्याख्यान 5 पर जाना होगा। यदि आप 2 जॉन चाहते हैं, तो वह व्याख्यान 4 है। यदि आप 3 जॉन चाहते हैं, तो वह व्याख्यान 3 है। लेकिन इस विशेष व्याख्यान, व्याख्यान 1 में, हम लेखक, तिथि और जॉन के पत्रों की सेटिंग को देखने जा रहे हैं।

और उसके बाद अगले व्याख्यान में, हम जॉन के पत्रों में विषयों पर विचार करने जा रहे हैं, ताकि बाद में पाठ में जाने से पहले हम चीजों को एक साथ ला सकें। तो आइए रुकें और इन व्याख्यानों में हमारे समय पर भगवान का आशीर्वाद मांगें। स्वर्गीय पिता, पवित्र शास्त्र के लिए धन्यवाद।

मसीह के आगमन और मसीह की सेवकाई के बारे में प्रेरित यूहन्ना की गवाही के लिए आपका धन्यवाद। चर्च के प्रति उनके प्रेम के लिए आपका धन्यवाद, क्योंकि उन्हें एक प्रिय शिष्य के रूप में जाना जाता है। और हम प्रार्थना करते हैं कि हम उस प्रेम को महसूस करें, कि हम इन पत्रों में सच्चाई को महसूस करें, कि हम उनमें दी गई आज्ञाओं को समझें, और कि हम उनके अध्ययन के माध्यम से मसीह में एक संतुलित जीवन में बढ़ें।

हम यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं। आमीन। यही शीर्षक मैं इन व्याख्यानों को दे रहा हूँ: मसीह में जीवन को संतुलित करना।

पत्रों को देखने में बहुत दूर चले जाएँ, मैं यह देखना चाहता हूँ कि उन्हें किसने लिखा, उसने उन्हें कब लिखा होगा, और यूहन्ना के पत्रों की पृष्ठभूमि क्या है। सबसे पहले, जहाँ तक लेखक का सवाल है, चर्च के इतिहास में कभी भी इस बात पर कोई संदेह नहीं रहा कि यीशु के चुने हुए शिष्य यूहन्ना ही लेखक थे। उन्हें यूहन्ना, जेबेदी का पुत्र कहा जाता है।

उसका भाई जेम्स था। आप जानते हैं, पीटर, जेम्स और जॉन यीशु के सबसे करीबी तीन शिष्य थे। और जॉन और उसके भाई जेम्स को थंडर के बेटे कहा जाता था।

इसलिए, पतरस को आमतौर पर गुस्सैल स्वभाव का माना जाता है, लेकिन ऐसा लगता है कि यूहन्ना और याकूब भी अपने विचारों के प्रति गहरी लगन वाले लोग थे। एक बार, वे कुछ सामरियों पर स्वर्ग से आग बरसाना चाहते थे, और यीशु ने उन्हें इसके लिए डांटा। इसलिए, वे भाइयों की एक जोशीली जोड़ी थे।

मैं बाद में उल्लेख करूंगा, जेम्स अंततः शहीद हो गए, लेकिन जॉन ने एक लंबी सेवकाई की, और लगभग 1800 वर्ष तक, बाइबल को गंभीरता से लेने वाले सभी लोगों ने सोचा कि जेबेदी के पुत्र

जॉन, यीशु के शिष्य, प्रिय शिष्य, ने जॉन का सुसमाचार लिखा, उन्होंने तीन पत्र लिखे, उन्होंने रहस्योद्घाटन की पुस्तक लिखी। 1800 के दशक के आसपास से, इन पुस्तकों के जोहानिन लेखकत्व पर संदेह किया गया है, लेकिन डोनाल्ड गुथरी की इंट्रोडक्शन टू द न्यू टेस्टामेंट, या कार्सन और म्यू, डॉन कार्सन और डगलस म्यू द्वारा इंट्रोडक्शन टू द न्यू टेस्टामेंट जैसी अच्छी किताबें हैं, और एंड्रियास कोस्टेनबर्गर, एल. स्कॉट केलम और चार्ल्स एल. क्लार्स द्वारा संपादित द क्रेडल, द क्रॉस, एंड द क्राउन नामक एक और भी हालिया किताब है। उन्होंने यूहन्ना सुसमाचार पत्र और रहस्योद्घाटन के लेखन के बारे में बहुत अच्छा विवरण दिया है, और मैं यह कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा कि मुझे नहीं लगता कि इसमें संदेह करने का कोई ठोस कारण है कि ज़ेबेदी के पुत्र यूहन्ना ने इन पत्रों को लिखा था।

और इसलिए, आप जानते हैं, यह परिचयात्मक मुद्दों पर कोई तकनीकी व्याख्यान नहीं है, और इसलिए मैं चर्च के इतिहास की सर्वसम्मति के साथ जा रहा हूँ और जब आप इसे सुसमाचार से तुलना करते हैं, जब आप इसे प्रकाशितवाक्य से तुलना करते हैं, और जब आप पहली और दूसरी शताब्दी के चर्च के इतिहास के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, उसे देखते हैं, तो मुझे लगता है कि यह सोचना जारी रखना बहुत समझदारी है कि जॉन ने ये पत्र लिखे थे। जहाँ तक उनके लिखने के समय का सवाल है, हम सटीक रूप से लेखन के समय का पता नहीं लगा सकते। यह सोचने का कारण है कि उन्होंने ये पत्र जीवन के बाद में लिखे थे, और प्राचीन रिपोर्टें जॉन को यरूशलेम के पतन के बाद इफिसुस के क्षेत्र में रखती हैं।

यरूशलेम 80 और 60 के दशक के अंत में गिर गया। ऐसी परंपराएँ हैं जो कहती हैं कि जब रोमन सेना उत्तर से यरूशलेम पर आगे बढ़ी, तो उन्होंने गैलिली पर विजय प्राप्त कर ली थी, और वे यरूशलेम में यहूदी गृह युद्ध को दबा रहे थे जो 80 और 60 के दशक में शुरू हुआ था। जब रोमन सेना ने उपहास किया, तो यीशु के शिष्यों को उनकी चेतावनी याद आ गई कि जब तुम सेनाओं को शहर में आते देखो, तो पहाड़ियों पर भाग जाओ।

और शिष्य भाग गए, और जॉन प्रकाशितवाक्य में आ गए, और वे 80 और 90 के दशक में अपनी मृत्यु तक वहीं रहे। यह उस तस्वीर के साथ मेल खाता है जो हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के शुरुआती अध्यायों से मिलती है, जहाँ जॉन पतमोस में निर्वासन में है, जो इफिसुस के तट से दूर एक द्वीप है। और वह उस द्वीप से एशिया की सात कलीसियाओं को लिखता है, जो रोमन प्रांत है जिसकी राजधानी इफिसुस थी।

इसलिए, हम कह सकते हैं, मुझे लगता है, कि जॉन इन सात कलीसियाओं के लिए एक पादरी नेता के रूप में लिखते हैं। वह प्रकाशितवाक्य लिखते हैं, और मुझे लगता है कि इसी संदर्भ में उन्होंने पत्र लिखे हैं। आप जॉन के पत्रों को जॉन के पतमोस में निर्वासन के समय से पहले के समय में उत्पन्न होने वाले के रूप में समझ सकते हैं।

यह एक परिदृश्य है जिसमें वह यरूशलेम से इफिसुस जाता है। वह इफिसुस से वहाँ के प्रमुख केंद्रों में चर्चों के साथ प्रचार करता है, उस रोमन प्रांत की सात कलीसियाएँ जिन्हें एशिया कहा जाता है। और वह अपने पत्र उस सामान्य समय सीमा में लिखता है और विश्वास के उन समुदायों को संबोधित करता है।

मैंने अक्सर कल्पना की है, मैं इसकी पुष्टि नहीं कर सकता, लेकिन मैंने कल्पना की है कि उसने ये पत्र तब लिखे होंगे जब वह निर्वासन में था और रिहाई की उम्मीद कर रहा था, जिसके बारे में वह बात करता है, कि उसे उम्मीद है कि वह उन लोगों के पास आ सकता है जिन्हें वह लिख रहा है। वह 2 यूहन्ना, पद 12 में ऐसा कहता है। वह 3 यूहन्ना, पद 14 में ऐसा कहता है।

और इसलिए, मुझे लगता है कि यह संभावना है कि तीनों पत्र उनके निर्वासन में लिखे गए थे, और मैं उस विचार पर फिर से विचार करूँगा क्योंकि हम प्रत्येक पत्र को देखते हैं। 1 यूहन्ना की सेटिंग के बारे में हम एक बात कह सकते हैं, क्योंकि 1 यूहन्ना 2.19 कहता है, कि चर्च में विभाजन हुआ है, या जिसे कभी-कभी विभाजन कहा जाता है। 1 यूहन्ना 2.19 कहता है कि वे हमसे बाहर चले गए।

तो, किसी ने मण्डली या मण्डलियों को छोड़ दिया है। याद रखें, इन दिनों उनके पास घर के चर्च थे। इसलिए, जब वह किसी इलाके में चर्च को संबोधित करता है, तो यह सिर्फ एक मण्डली हो सकती है, लेकिन यह कई छोटी-छोटी सभाएँ भी हो सकती हैं जो घरों में इकट्ठा होती हैं।

हमसे निकले, लेकिन वे हमारे नहीं थे। और यह प्रारंभिक चर्च के जीवन पर प्रकाश की किरण है। सुसमाचार साझा किया जाएगा, लोग विश्वास में आएंगे, जिसे हम मण्डली कहते हैं वह बनेगा।

और हम चर्च के इतिहास में यह देखते हैं कि जहाँ कहीं भी सत्य है, वहाँ बहुत जल्दी, सत्य से भटकने वाली कोई चीज़ उभर कर सामने आती है। कई बार स्थानीय धार्मिक या स्थानीय सामाजिक मान्यताओं के कारण विरोधी समझ पैदा होती है जो सुसमाचार के काम करने के रास्ते में बाधा बनती है। और इसलिए, टकराव पैदा होता है, और कई बार स्थानीय ताकतें चर्चों पर कब्ज़ा कर लेती हैं।

इसे समन्वयवाद कहा जाता है। चर्च अपने स्वयं के मूल विचारों को अपनाता है, और वे सुसमाचार द्वारा बाहर से लाए गए विचारों पर विजय प्राप्त करते हैं। अन्य समय में, यह व्यक्तिगत प्रकृति का अधिक होता है।

जॉन जैसा एक प्रेरित नेता है जो कहता है कि वह एक चर्च स्थापित करता है, और फिर समय के साथ, कोई ईर्ष्यालु हो जाता है, या कोई अपने तर्क में गलत हो जाता है, और वे तय करते हैं कि वे जॉन या जिसने भी चर्च स्थापित किया है, उससे ज़्यादा जानते हैं। और इसलिए, वहाँ घर्षण है। और चर्च में घर्षण था जिसके बारे में जॉन 1 जॉन 2 में लिखते हैं, और ये लोग हमसे बाहर चले गए, जॉन कहते हैं, लेकिन वे हम में से नहीं थे।

और अगर वे हमारे जैसे होते, तो वे हमारे साथ ही रहते। लेकिन वे बाहर चले गए, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि वे सब हम नहीं हैं। और मैं यहाँ ESV, इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्शन से उद्धरण दे रहा हूँ।

इसलिए, तीनों पत्रों में से, 1 यूहन्ना स्पष्ट रूप से प्रमुख है, हालाँकि मुझे लगता है कि 2 और 3 यूहन्ना महत्वपूर्ण हैं। लेकिन 1 यूहन्ना, एक पत्र के रूप में, उन मण्डलियों को स्थिर करने के लिए है जो इस विभाजन के बारे में जानते थे और जो यूहन्ना के चर्च या चर्चों से अलग होने के लिए

लुभाए गए थे, या शायद बाहर जाने वाले लोगों की दिशा में अपने सिद्धांत या उनके व्यवहार को समायोजित करने के लिए। यह सिद्धांत दिया गया है कि 3 यूहन्ना गयुस नामक एक व्यक्ति को एक आवरण पत्र था।

यह निश्चित रूप से गयुस नाम के एक व्यक्ति को लिखा गया है। लेकिन यह गयुस को लिखा गया एक कवर लेटर भी हो सकता है, जो जॉन का सहयोगी था। और यह बात 3 जॉन को पढ़ने पर स्पष्ट हो जाती है।

जॉन और गयुस के बीच अच्छे संबंध हैं। और पतमोस के बारे में मेरे विचार पर वापस आते हुए, जॉन पतमोस पर निर्वासन में हो सकता था, या वह विरोध के कारण मुख्य भूमि पर छिपा हुआ हो सकता था। या शायद वह अब यात्रा करने के लिए बहुत बूढ़ा हो गया था, और वह खुद चर्चों में 1 जॉन वितरित नहीं कर सकता था।

और जब हम 3 यूहन्ना में जाते हैं, तो हम देखते हैं कि डेमेट्रियस नाम का कोई व्यक्ति है, और उसका उल्लेख पद 12 में अनुकूल रूप से किया गया है। इसलिए यह हो सकता है कि डेमेट्रियस वह व्यक्ति था जिसने गयुस को यूहन्ना की तीन चिट्ठियाँ पहुँचाई थीं। 3 यूहन्ना 9 में, गयुस को लिखे गए इस पत्र में, हम दियुत्रिफेस के बारे में पढ़ते हैं, जिसने यूहन्ना का विरोध किया था, और सुसमाचार संदेश के बारे में पढ़ते हैं जिसका यूहन्ना समर्थन करता था।

3 यूहन्ना 9 में, यूहन्ना लिखता है, मैंने कलीसिया को कुछ लिखा है, वह गयुस को लिखता है। गयुस, मैंने कलीसिया को कुछ लिखा है। और उसका मतलब 2 यूहन्ना, या 1 यूहन्ना, या दोनों हो सकता था।

और इसलिए 2 यूहन्ना गयुस की कलीसिया को एक पत्र हो सकता है, जो गयुस की कलीसिया को प्रोत्साहित करता है कि वे 1 यूहन्ना को प्राप्त करें, ताकि वे स्वयं मजबूत हो सकें, और फिर गयुस को इसे अन्य कलीसियाओं में वितरित करने में सहायता करें। इसलिए, तीनों पत्रों को एक व्यक्ति, गयुस, 3 यूहन्ना, एक व्यक्तिगत कलीसिया, चुनी हुई महिला और उसके बच्चों, 2 यूहन्ना पद 1, यानी एक मण्डली और उसके सदस्यों, और फिर 1 यूहन्ना को प्राप्त करने वाली सभी कलीसियाओं के लिए एक एकीकृत प्रेरितिक कथन के रूप में देखा जा सकता है। और यह हो सकता है कि ये पत्र इफिसुस की कलीसिया और एशिया के आस-पास की कलीसियाओं में आ रहे हों, जिन्हें बाद में प्रकाशितवाक्य 1 से 3 में संबोधित किया गया था, इफिसियन कलीसिया से शुरू करते हुए, जिसे हम बस एक मिनट में देखेंगे।

तो यह एक काल्पनिक सेटिंग है, यह एकमात्र ऐसी चीज़ है जो हम कर सकते हैं, हम दूसरी सदी, तीसरी सदी की गवाही को देख सकते हैं, हम खुद पत्रों को पढ़ सकते हैं, हम उन्हें खंडित रूप में देख सकते हैं और एक दूसरे से कोई संबंध नहीं रखते हैं। इसके विपरीत यह अवलोकन है कि तीसरा जॉन अपने आप में और दूसरा जॉन अपने आप में इतने महत्वहीन हैं कि यह कल्पना करना कठिन है कि उन्हें क्यों संरक्षित किया गया होगा यदि उनका कोई महत्व नहीं था, आप जानते हैं, यदि आप उन्हें अन्य पत्रों के साथ किसी भी अन्य संपर्क से काट देते हैं तो उनका क्या महत्व होता। और मैं यहाँ ल्यूक टिमोथी जॉनसन द्वारा लिखे गए परिचय के बारे में सोच रहा हूँ,

वह पहले नहीं हैं, लेकिन वह उनमें से एक हैं जिन्होंने हाल की पीढ़ी में, आप जानते हैं, इन तीन पत्रों के बारे में एक पैकेट की तरह लिखा था, और हमें उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़कर पढ़ना चाहिए, और यदि हम ऐसा करते हैं, तो जो परिदृश्य मैंने अभी रेखांकित किया है वह समझ में आता है, कि तीसरा यूहन्ना आवरण पत्र है, ग्युस कहीं से पहला, दूसरा और तीसरा यूहन्ना प्राप्त करता है, जहाँ भी यूहन्ना है, वह उस पत्र को पढ़ता है जो उसके लिए है, और फिर वह दूसरा यूहन्ना पढ़ने जा रहा है या अपने चर्च में दूसरा यूहन्ना पढ़वाता है, और फिर वह पहले यूहन्ना को उस चर्च को आदेश देने जा रहा है जो इसे पढ़ता है, जो मुझे लगता है कि यह कहना सबसे अधिक समझ में आता है कि यह इफिसुस का चर्च है, और फिर वहाँ से यह फैलने जा रहा है या इसका संदेश एशिया के अन्य चर्चों, अन्य सात चर्चों, या अन्य छह चर्चों तक फैलने जा रहा है, जो इस विभाजनकारी समूह की दिशा में जाने के लिए लुभाए जा सकते हैं, दियुत्रिफेस.

तो लेखक और परिवेश के बारे में जो मैं कहना चाहता हूँ, उसे समाप्त करते हुए, मैं उस पर पुनः विचार करना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि यूहन्ना ने इफिसुस की कलीसिया को लिखा था, हम सभी सात पत्रों को देख सकते हैं, लेकिन हमारे पास ऐसा करने का समय नहीं है, और यह प्रकाशितवाक्य पर व्याख्यानों में अधिक उपयुक्त होगा, जो मुझे यकीन है कि इस वेबसाइट पर कहीं और हैं, लेकिन मैं इफिसुस की कलीसिया को देखना चाहता हूँ और इस बारे में कुछ अवलोकन करना चाहता हूँ कि हम क्या जानते हैं, हम इस कलीसिया के बारे में क्या देखते हैं। आप प्रकाशितवाक्य 2 की आयत 1 से 7 तक की अपनी प्रति देख सकते हैं, यह इस प्रकार शुरू होता है, इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत को उसके वचन लिखो, जो अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए है, जो सात स्वर्ण दीवटों के बीच में चलता है, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के व्यापक संदर्भ में, हम जानते हैं कि यह मसीह है जो कलीसिया से, कलीसिया के स्वर्गदूत से बात कर रहा है, कुछ लोग सोचते हैं कि यह कलीसिया को सौंपा गया स्वर्गदूत है, कुछ लोग सोचते हैं कि यह पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, कुछ लोग सोचते हैं कि यह संदेशवाहक का प्रतिनिधित्व करता है, एक स्वर्गदूत संदेशवाहक हो सकता है, कलीसिया के आध्यात्मिक नेतृत्व का प्रतिनिधित्व कर सकता है, वास्तविक बिंदु संदेश है, और हम आयत 2 में शब्दों को देखते हैं, मैं तुम्हारे कामों, तुम्हारे परिश्रम, और तुम्हारे धैर्य को जानता हूँ, और यह भी कि तुम बुरे लोगों को कैसे सहन नहीं कर सकते, बल्कि जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और जो प्रेरित नहीं हैं, उन्हें तुमने परखा है और उन्हें झूठा पाया है। तो ये इफिसुस की कलीसियाएँ हैं, या मैं कलीसियाएँ कहता हूँ, मैं कलीसियाओं के बारे में सोच रहा हूँ, ये प्रतिबद्धता और समझदारी वाली कलीसियाएँ हैं।

उनके पास काम है, उनके पास मेहनत है, उनके पास धीरज है, आप उन लोगों को सहन नहीं कर सकते जो बुरे हैं, यही समझदारी है, आपने उन्हें परखा है, जो खुद को प्रेरित कहते हैं, और यही तस्वीर हमें 1 यूहन्ना 2, 19 में मिलती है, ये लोग उनसे बाहर निकल गए, लेकिन वे उनमें से नहीं थे, इसलिए वे हम से अलग हो रहे हैं जिसका उपयोग यूहन्ना करता है, जो मुझे लगता है कि खुद को और दूसरों को संदर्भित करता है जो प्रेरितों के संदेश को उसकी पूर्णता और सच्चाई में दर्शाते हैं। इफिसुस के चर्च की यहाँ सुसमाचार जीवन में ईमानदारी के अपने पिछले ट्रैक रिकॉर्ड, सुसमाचार तर्क में, सुसमाचार सिद्धांत निर्माण में दृढ़ता से सराहना की जाती है। वह पद 3 में आगे कहता है, मैं जानता हूँ कि तुम मेरे नाम के लिए धीरज से सह रहे हो, और सहन कर रहे हो, और थके नहीं हो।

मेरा मतलब है, वे एशिया में चर्चों को लिखे गए सात पत्रों में संबोधित पहला चर्च हैं, और वे शायद सबसे मजबूत चर्च हैं। मेरा मतलब है, इफिसस तुलनात्मक रूप से रोमन साम्राज्य के महान शहरों में से एक था, लाओडिसिया और स्मिर्ना जैसी छोटी जगहें तुलनात्मक रूप से गाँव हैं, और इसलिए वह मातृ चर्च, बड़े चर्च, शक्तिशाली चर्च की उनकी सहनशक्ति के लिए सराहना कर रहे हैं। लेकिन एक मुद्दा है।

लेकिन मेरे पास तुम्हारे खिलाफ यह है, वह श्लोक 4 में कहता है, कि तुमने वह प्रेम त्याग दिया है जो तुम्हारे पास पहले था। इसलिए इफिसस का चर्च प्रेरितिक ईसाई धर्म के एक मोहर से संपर्क खो रहा था, खासकर जैसा कि जॉन ने इसे चित्रित किया है, और वह है अगापे, आप जानते हैं, वह प्रेम जो मसीह ने दिखाया, वह प्रेम जो ईश्वर का एक गुण है, और वह प्रेम जो पुराने नियम के समय और नए नियम के समय में ईश्वर के समुदाय का एक हिस्सा है, जब वे ईश्वर के साथ सही होते हैं, और जब वे उसके साथ और एक-दूसरे के साथ संगति में रहते हैं। लेकिन अगर आप एक ईसाई हैं, तो आप जानते हैं, आप जानते हैं, अपने ईसाई जीवन में तेज बने रहना, और याद रखें, हम ईसाई जीवन को संतुलित करने के बारे में बात कर रहे हैं, संतुलित रहना कठिन है, जीवित और जीवंत बने रहना कठिन है, सुस्त होना आसान है।

पाप करना कठिन नहीं है, छोटे-मोटे तरीकों से या भगवान न करे, भगवान से दूर जाना कठिन नहीं है, लेकिन बड़े तरीकों से, आप जानते हैं, ईसाई कभी-कभी अपना रास्ता खो देते हैं। और जॉन कहते हैं, आपने वह प्रेम त्याग दिया है जो आपके पास पहले था। हम नहीं जानते कि पहले का क्या मतलब है, क्या इसका मतलब यह है कि जब जॉन वहाँ पहुँचे, तो पॉल ने पहले से ही इफिसस में चर्च स्थापित कर दिए थे, और अपोलोस ने इफिसस में सेवा की थी, इसलिए इफिसस का इतिहास, आप जानते हैं, संभवतः, 1 जॉन के लिखे जाने तक, कुछ दशकों का था, इसलिए हम विवरण नहीं जानते हैं, लेकिन हालाँकि उन्होंने अच्छी शुरुआत की थी, उन्होंने इस अच्छी शुरुआत के साथ अपना संपर्क खो दिया है।

और, आप जानते हैं, हमें बस यह सोचने के लिए रुकना चाहिए कि यह मानव जाति और सुसमाचार के स्वागत की एक विशेषता है, पहली पीढ़ी अक्सर काफी उत्साही होती है, आप जानते हैं, हम अंधेरे से प्रकाश की ओर जाते हैं, और हम बहुत आभारी हैं, और शायद हम ईमानदारी से जीते हैं, लेकिन फिर, आप जानते हैं, अगली पीढ़ी आती है, और कभी-कभी वे अपने माता-पिता के उत्साह को समझने के लिए संघर्ष करते हैं, और फिर अगली पीढ़ी आती है, और हर पीढ़ी के साथ, नए अवसर होते हैं, और भगवान की कृपा को नवीनीकृत किया जा सकता है, लेकिन औपचारिकता का खतरा भी है, और परंपरावाद का खतरा है, और लोगों के पास ईसाई धर्म का एक रूप है, लेकिन, आप जानते हैं, इसकी वास्तविक शक्ति, इसकी शुद्धता, भगवान के प्यार की शक्ति, और इसकी ताजगी, यह वहाँ नहीं है, और इसलिए यह इफिसस में एक समस्या है, जैसा कि जॉन उनका प्रतिनिधित्व करता है, वे संपर्क खो रहे हैं, या उन्होंने भगवान के अगापे प्रेम से संपर्क खो दिया है। इसलिए, वह सिर्फ उनकी निंदा नहीं करता है और आगे बढ़ जाता है, वह कहता है, याद रखें। इसलिए याद रखें, जहाँ से आप गिरे हैं, वहीं वापस जाएं जहाँ से आपने गलत मोड़ लिया था।

यह एक चर्च है, या चर्चों का समूह है, जिसे याद रखने की ज़रूरत है, इसे पश्चाताप करने की ज़रूरत है, जिसका मतलब है मुड़ना, या वापस लौटना, और वह आगे कहता है, पश्चाताप करो और वही काम करो जो तुमने पहले किए थे। अब, हम बाद में देखेंगे कि विश्वास, और काम, और प्रेम किस तरह आपस में जुड़े हुए हैं, और जब वह उन तीनों में से किसी एक का उल्लेख करता है, तो वह अन्य दो का संकेत देता है। वह यह नहीं कह रहा है, यह सिर्फ़ कामों का धर्म है, इसलिए शुरुआत में वापस जाओ, और शुरुआत कामों से हुई थी, और इसलिए बस इतना ही, बस वापस जाओ और उन कामों को फिर से करो।

वह जिस भी काम की बात कर रहा है, उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्हें सुसमाचार मिला जिसने उनके दिलों को बदल दिया, और इसने उनमें परमेश्वर के प्रेम को स्थापित किया, और इसलिए उनके कामों में प्रेम शामिल था, और यह सब विश्वास के माध्यम से आया। पॉल कहते हैं, विश्वास सुनने से आता है, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है, और यह पुराने और नए नियम के लिए सच है। परमेश्वर अपने लोगों को पुराने नियम में संबोधित करता है, इसे शेमा कहा जाता है, हे इस्राएल सुनो, और जैसे ही परमेश्वर के लोग सुनते हैं, परमेश्वर उनके साथ एक रिश्ते में प्रवेश करता है, और उनके कार्य बदल जाते हैं, उनके कार्य परमेश्वर के साथ उनके रिश्ते को दर्शाते हैं।

इसलिए वह कहता है, वापस जाओ और वही काम करो जो तुमने पहले किए थे, अपने विश्वास को नवीनीकृत करो, परमेश्वर के प्रेम में नवीनीकृत हो जाओ। तो यह, आप जानते हैं, इफिसुस में चर्च में जीवन की एक और विशेषता है। पद 6 कहता है, फिर भी तुम्हारे पास यह है, इसलिए वह प्रशंसा से, पद 4 में उनसे सवाल करने के लिए गया, पद 5 में उन्हें यह बताने के लिए कि इसका समाधान कैसे किया जाए, और अब पद 6 में, सकारात्मक पर वापस आता है, फिर भी तुम्हारे पास यह है, तुम निकोलायतियों के कामों से घृणा करते हो, जिससे मैं भी घृणा करता हूँ, और यदि तुम निकोलायतियों को देखो, तो तुम देखोगे कि हम निकोलायतियों के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं, लेकिन इस संदर्भ से, हम कह सकते हैं कि ये वे लोग थे जो ईसाई धर्म की आज्ञाओं, मसीह की आज्ञाओं, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं कर रहे थे।

तो, पद 6 कह रहा है कि ये वे कलीसियाएँ हैं, जिनकी यीशु ने प्रशंसा की है, क्योंकि वे परमेश्वर की मुक्तिदायी आज्ञाओं के लिए आवश्यक उत्साह बनाए रखते हैं, वे चीज़ें जो परमेश्वर के लोगों को विश्वास करने के लिए कहता है, वे चीज़ें जो वह उन्हें करने के लिए कहता है, वह प्रेम जो वह उन्हें दिखाने के लिए कहता है। निकोलायन के बारे में हम जो थोड़ा जानते हैं, उससे ऐसा लगता है कि वे सुसमाचार और उसके प्रकटीकरण, प्रेरितों के युग में उसके विशिष्ट प्रकटीकरण के विरुद्ध विद्रोह करने वाले समूह थे। और यहाँ बहुत कठोर भाषा है।

मसीह कहते हैं, जिससे मैं भी घृणा करता हूँ, मसीह के द्वारा परमेश्वर, मसीह में परमेश्वर। वह धार्मिकता से प्रेम करता है। जब वह अपने लोगों के साथ संगति करता है तो उसे यह अच्छा लगता है।

वह इसे बहुत पसंद करता है जब वह पापियों के माध्यम से पापियों के साथ संगति करता है, अंधकार से दूर हो जाता है और वह प्रकाश प्राप्त करता है जिसे वह मानव अस्तित्व में लाता है।

और वह इससे घृणा करता है जब लोग अंधकार में बने रहते हैं, या जब वे प्रकाश में कदम रखते हैं, और वे प्रकाश की उपस्थिति से लाभ उठा सकते हैं, लेकिन फिर वे विद्रोह करते हैं। वे इसके खिलाफ हो जाते हैं।

उन्हें लगता है कि वे सच्चे आस्थावान समुदाय से, प्रेरितों से, शास्त्रों से ज़्यादा जानते हैं। इसलिए वे उस आवेग के आगे झुक जाते हैं जो हम सभी में आम है, विद्रोह करने का आवेग। मैं कल रात एक प्रमुख ईसाई नेता से बात कर रहा था, और वह मुझे बता रहा था कि जब वह हाई स्कूल में था तो वह कितना विद्रोही था।

और वह हर रोज़ घंटी बजने के बाद एक मिनट के लिए अपनी अंग्रेज़ी कक्षा के बाहर खड़ा रहता था, और जानबूझकर एक मिनट देरी से आता था। और वह कुछ हद तक मैला-कुचैला कपड़ा पहनता था, और उसके लंबे बाल थे, और आप जानते हैं, वह अस्त-व्यस्त दिखता था, लेकिन इस कक्षा में उसके अंदर कुछ था। वह खुद को अभिव्यक्त करना चाहता था और ऐसा इस तरह से करता था कि शिक्षक को बुरा लगे।

और अगर आपके बच्चे हैं, तो कभी-कभी आप देखते हैं कि बच्चों में विद्रोही भावना होती है। और अगर आप शादीशुदा हैं, तो कभी-कभी आपके जीवनसाथी को आप में विद्रोही भावना का एहसास होगा। इसलिए निकोलायन के लोग वे लोग थे जिनसे मसीह घृणा करता था, क्योंकि जो काम वे करते थे, वे परमेश्वर द्वारा मण्डली में अपने लोगों को बुलाए जाने और करने के लिए सक्षम किए जाने के अनुरूप नहीं थे।

और इसलिए, इफिसियों की प्रवृत्ति चाहे कितनी भी गलत क्यों न हो, और इसलिए इन आयतों में सुधार के कुछ शब्द हैं, वे अभी तक निकोलायनियों के साथ जाने तक नहीं पहुँचे हैं। और कौन जानता है, शायद यह निकोलायनियों का आवेग था जिसे हम 1 यूहन्ना 2:19 में देखते हैं, जहाँ लोग बाहर गए थे, लेकिन वे उस समूह के नहीं थे जिसे यूहन्ना संबोधित करता है। हम इन बातों को नहीं जानते, लेकिन ये निश्चित रूप से संभावनाएँ हैं।

वह निष्कर्ष निकालता है, मसीह पद 7 में निष्कर्ष निकालता है, और बेशक यूहन्ना ये बातें लिख रहा है, इसलिए हम यह भी कह सकते हैं कि यूहन्ना निष्कर्ष निकालता है, जिसके पास कान हैं, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो जीतता है, यह एक ऐसा शब्द है जो 1 यूहन्ना में आता है, जो जीतता है, मैं उसे जीवन के वृक्ष का फल खाने को दूँगा, जो परमेश्वर का स्वर्ग है। और मुझे लगता है कि यह इस जीवन में परमेश्वर के साथ पूर्ण संगति को संदर्भित करता है, और फिर स्वर्ग में आने वाले जीवन की खुशियाँ और उत्सव भी।

लेकिन इफिसुस की कलीसियाएँ प्रतिज्ञाओं से भरी हुई कलीसियाएँ थीं, खास तौर पर इसलिए क्योंकि वे संदेश सुनना जारी रखेंगे, वह संदेश जो उनके पास शुरू से था। संदेश यह था कि वे तीखे बने रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे, क्योंकि उनमें पहले जैसा प्रेम त्यागने की प्रवृत्ति थी। लेकिन एक ऐसा समूह जिसमें नए सिरे से बनने की क्षमता थी, निकोलायतन और अन्य शत्रुतापूर्ण आवेगों के खिलाफ मजबूत बने रहने की, और नए सिरे से बनने की ताकि वे इस जीवन में और आने वाले जीवन में परमेश्वर के वादे की पूर्णता प्राप्त कर सकें।

तो यह जॉन के पत्रों के लेखक, तिथि और सेटिंग पर एक त्वरित नज़र है, जैसा कि हम जोहानिन एपिस्टल्स, बैलेंसिंग लाइफ इन क्राइस्ट को देखते हैं। और यह इस पहले व्याख्यान का अंत है।

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो और जोहानिन एपिस्टल्स, बैलेंसिंग लाइफ इन क्राइस्ट पर उनकी शिक्षा है। सत्र एक, लेखक, तिथि और जॉन के पत्रों की सेटिंग।